शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

हिन्दी निबंध साहित्य व महिला निबंधकार : चुनौतियाँ व समाधान

प्रो.माधुरी गोडबोले
आय.पी.एस.अकादमी,
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

उन्नीसवीं सदी का नव जागरण एक प्रकार से नारी केन्द्रित था। पहली बार नारी को एक मानवी की तरह पहचानने की कोशिश की जा रही थी। जैसे ही, यह कोशिश शुरु हुई, यह साफ-साफ दिखायी देने लगा कि साहित्य क्षेत्र से वह पूरी तरह निर्वासित है। इस सत्यज्ञान के कारण नारी स्वयं भी चैतन्य हुई और उसकी अंत:चेतना साहित्य में तथा बहिर्चेतना सामाजिक-राजनीतिक बिन्दुओं पर स्पष्ट हुई और समय के साथ ही यह भी सिद्ध हो गया कि साहित्य के क्षेत्र में भी स्त्रियों की उपेक्षा संभव नहीं।

प्रस्तावना

सन् 1950 के बाद शिक्षा के साथ जो मानसिक स्वतंत्रता महिलाओं को प्राप्त हुई उसका प्रभाव महिला-लेखन के विकास पर निश्चित रूप से पड़ा है। विज्ञान, तकनीकी ज्ञान की सहायता, हिंदू कोड बिल, एकल सीमित परिवार एवं आर्थिक रूप से स्त्री का आत्मनिर्भर होना ये सब बातें बहुत सीमा तक महिला लेखन मुख्य रुप से निबंध लेखन में सहयोगी रही। 1950 के उपरांत साहित्य समीक्षा के क्षेत्र में एक नया परिवर्तन आया जिसने निबंध के क्षेत्र में विशेषकर ललित निबंध के क्षेत्र में युगांतरकारी परिवर्तन को संभव बनाया। शिक्षित स्त्रियों के द्वारा जो रचनाएं लिखी गयीं उनमें भावात्मकता के साथ-साथ वैचारिकता का महत्व व प्रतिशत भी बढ़ता गया। आज पहले की तुलना में निबंध लेखिकाओं की संख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। सन् 1975 के बाद की कुछ प्रमुख निबंध लेखिकाओं व उनकी रचना के नाम से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि निबंध लेखिकाओं की संख्या इससे अधिक भी हो सकती है।

उदाहरण स्वरुप कुछ निबंध संग्रह व उनकी लेखिकाओं के नाम इस प्रकार है-

निबंध संग्रह और निबंधकार

1.अकेले होते लोग - डॉ.स्वाति तिवारी
2.सफर सुहाने- पुष्पा भारती
3.क ख ग- मृदुला सिन्हा
4.आस्था के सेतु - राजेश्वरी शांडिल्य
5.अपने समय के साहित्य पर सोचते हुए - बूलाकार
6.कितने शहरों में कितनी बार - ममता कालिया
7.खिड़की के पास वाली जगह - लता शर्मा
8.प्रसंगत: - अमृता भारती
9.तलाश अस्तित्व की - मीनाक्षी जोशी
10.साहित्य समाज का दर्पण है - रचना यादव
11.निबंध प्रभा - डॉ.शीलप्रभा मिश्र
12.शिल्पी है जल - पुष्पा रानी गर्ग
13.चैत चित्त मन महुआ - नीरजा माधव
14.बागड़ों से उखडे बबूल - मालती शर्मा
15.साहित्य का पारिस्थितिक दर्शन - के. वनजा
16.मौसम की अंगुली थामे - साधना देवेश
17.घर की भाषा घर का भाव - डॉ.विद्याबिन्दु सिंह

स्वतंत्र व वैचारिक निबंध लेखन में महिलाओं की उपस्थिति बढ़ने के बाद भी साहित्यिक दखल व समीक्षा के अभाव में विधा विशेष के इतिहास ग्रंथों में उनका समावेश नहीं हो सका। प्रसिद्ध साहित्यकार मृदुला गर्ग कहती हैं - "निबंध के परिदृश्य पर लिखा जायेगा तो विश्लेषण, विवेचन होगा केवल मर्दों के लिखे निबंध का। बाद में चलते-चलते कुछेक महिला निबंधकारों का जिक्र किया जायेगा कि ये भी लिख रहीं हैं जबकि लेखन का संबंध लिंग से नहीं भाव बोध, जीवन दृष्टि और चेतना से है।" सहज ही प्रश्न उठता है कि क्या महिला निबंधकार की स्थिति देशी अंग्रेजी लेखकों के समान है? ज्यादातर आलोचक मर्द हैं। रचना का लैंगिक विभाजन करना वे उदारता और बडप्पन की निशानी मानते हैं। उसके चलते महिलाओं द्वारा लिखे तमाम साहित्य को महिला लेखन के खांचे में डाल देते हैं। समकालीन साहित्य पर कोई चर्चा या समीक्षा तब तक पूर्ण नहीं हो सकती जब तक उसमे नारी चेतना से प्रेरित सृजन को यथोचित स्थान न दिया जाए। क्या इसके लिये साहित्यिक परिस्थिति के साथ-साथ सामाजिक परिस्थिति भी उत्तरदायी है। इस प्रश्न के उत्तर में जिन कारणों को उत्तरदायी माना जा सकता है इस प्रकार हैं:-

1.प्रोत्साहन/प्रेरणा का अभाव - निबंध साहित्य में महिलाओं की संख्या कम होने के सर्वाधिक उत्तरदायी कारणों में से पहला कारण प्रोत्साहन का अभाव है। यह अभाव सभी स्तरों पर दिखाई देता है। परिवार, पाठक, समीक्षक तथा प्रकाशक सभी से इस क्षेत्र में प्रोत्साहन न मिलने के कारण महिलायें इस क्षेत्र में आगे नहीं आ पाती। निबंधों को पाठक नहीं मिलते अतः प्रकाशक उन्हें प्रकाशित करने के लिये उत्सुक नहीं होते। प्रकाशित न होने से समीक्षा नहीं हो पाती एवं परिणाम स्वरुप इस विधा को चुनने वाली लेखिकाओं की संख्या में वृद्धि नहीं हो पाती।

2.पारिवारिक जिम्मेदारिया - संख्या कम होने के कारणों में एक कारण पारिवारिक जिम्मेदारियों की अधिकता है। लेखिकाओं का मानना है कि समयाभाव के कारण वे साहित्य रचना निश्चिंतता से नहीं कर पातीं। यथेष्ट अध्ययन, चिंतन व मनन के लिये जिस प्रकार के वातावरण की आवश्यकता होती है उसकी अनुपलब्धता के कारण वे चाहकर भी इस विधा को नहीं चुन पाती।

3.क्लिष्ट व श्रमसाध्य विधा - जैसा कि रामचंद्र शुक्ल ने कहा था 'गद्य की कसौटी निबंध है' अतः जब तक गद्य लेखन की गुणवत्ता चरम पर नहीं पहुंचती तब तक एक अच्छा निबंध लेखक नहीं बना जा सकता। निबंध विधा को महत्प्रयास से ही साधा जा सकता है। इस विधा में भावनाओं व विचारों को व्यक्त करने के लिये किसी काल्पनिक पात्र का सहारा नहीं लिया जा सकता। व्यक्तित्व की प्रौढ़ता, भावों की गंभीरता, विचारों की तर्क शुद्धता एवं मन की संवेदनशीलता का सुवर्णसंगम जब तक नही होता तब तक निबंध लेखन में श्रेष्ठता व स्तरीयता नहीं आ पाती। इन सब विशेषताओं को अपने व्यक्तित्व में समाहित कर निबंध रचना करना श्रमसाध्य कार्य है व विधा के स्तर पर अत्यंत ही कठिन है। भाव प्रवण स्वभाव के कारण महिलाएं सहसा इस क्षेत्र में आगे नहीं आ पाती।

4.पाठकों व प्रकाशकों की अरुचि - वर्तमान समय में पुस्तकों के प्रति लोगों की रुचि कम हो गई है। सभी प्रकार के साहित्य को पाठक नहीं मिल पा रहे हैं। उसमें भी कविता, कहानी व उपन्यास

के पाठकों की संख्या तुलनात्मक रूप से अधिक है अतः इनकी मांग अधिक है। इन की मांग सतत रहने के कारण प्रकाशकों की रुचि भी उनके प्रकाशन में अधिक होती है। गंभीर साहित्य के प्रेमी हमेशा से ही अल्पसंख्या में रहे हैं। वर्तमान समय में तो यह संख्या और भी घट रही है। पाठक व प्रकाशक एक रचनाकार के लिये संजीवनी का कार्य करते है ऐसे में निबंध लेखिकाओं की संख्या न बढ़ पाना स्वाभाविक ही है।

5.स्त्रियों के स्वभाव के अनुकूल न होना - मराठी भाषी लेखिकाओं का मानना है कि स्त्रियाँ स्वभाव से ही भावुक, कोमल व संवेदशील होती हैं। उनका स्वाभाविक झुकाव रागात्मक अभिव्यक्ति की ओर होता है। यही कारण है कि वे विशेष रूप से वैचारिक लेखन विशेष रूप से निबंध लेखन के प्रति विशेष उत्सुक नहीं होती।

संक्षेप में महिला निबंधकारों के निबंध साहित्य के संदर्भ में प्राप्त तथ्यों को निम्न बिंदुओं के अन्तर्गत रखा जा सकता है :

1.हिन्दी में निबंध लेखिकाओं की अल्प उपस्थिति का कारण पारिवारिक व सामाजिक परिस्थिति है। यह परिस्थिति धीरे-धीरे बदल रही है।

2.अल्प उपस्थिति का कारण पत्र पत्रिकाओं में निबंध को अन्य विधाओं की तुलना में कम महत्व मिलता है जिसे बढ़ाया जाना चाहिये।

3.समीक्षकों व विद्वानों को महिलाओं के प्रति पूर्वाग्रह मुक्त होना चाहिये।

4.स्वयं महिलाओं को लोकप्रियता का मोह त्यागकर वैचारिकता को प्राधान्य देना होगा।

5.छपने अथवा न छपने के भय से मुक्त होकर उत्तम निबंधों की रचना करना होगी।

6.हिन्दी भाषी समाजों में साहित्य व गंभीर साहित्य के पठन में रुचि उत्पन्न होने से भी निबंध साहित्य का विकास संभव है।

7.निबंध व निबंध साहित्य की पुस्तकों का समावेश पाठ्यक्रमों, पुस्तकालयों एवं सार्वजनिक वाचनालयों में होना चाहिए।

8.निबंध रचना के निर्धारण का निश्चित मानदंड निर्धारित करना होगा। ललित एवं अपनी रचना को स्वयं लेखिकाओं द्वारा निबंध शीर्षक के नाम से प्रकाशन के लिए देना होगा। बीसवी सदी के उत्तरार्द्ध में नए भाव बोध से अनुप्राणित साहित्य की रचना में सबसे अधिक हाथ नारी चेतना का रहा है। इस योगदान को बढ़ाने एवं रेखांकित करने के निम्न प्रयास किये जाने चाहिए-

1.साहित्यिक सामाजिक पत्रिकाओं के प्रकाशन में वृद्धि - हिन्दी में साहित्यिक पत्रिका व सामाजिक पत्रिका अलग-अलग छपती हैं। साहित्यिक पत्रिका के पाठक सीमित हैं। सामाजिक पत्रिका सभी प्रकार के पाठकों द्वारा पढ़ी जाती है परन्तु इनकी संख्या सीमित है। इन पत्रिकाओं की संख्या बढाना एवं इनमें साहित्यिक विधाओं विशेषकर निबंधों का प्रकाशन किया जाना चाहिए। इससे लेखकों को प्रोत्साहन मिलेगा एवं परिपक्व साहित्य पढने की लोगों को आदत होगी।

2.समीक्षा एवं इतिहास ग्रंथो का पुनर्लेखन - हिन्दी में समीक्षा एवं इतिहास ग्रंथो का पुन:लेखन किया जाना चाहिए, जिसमें अर्वाचीन लेखकों को भी सम्मिलित किया जाना चाहिये। उदाहरण के रुप में डॉ.सुमन राजे द्वारा लिखित - हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास को सम्मिलित किया जा सकता है।

3.परिवार के सदस्यों की साहित्यिक अभिरुचि में वृद्धि - हिन्दी में अगर पठन-अध्ययन में रुचि

रखने वालों की संख्या में वृद्धि होगी तो इससे लेखिकाओं को भी अधिक परिपक्व साहित्य लिखने की प्रेरणा मिलेगी एवं प्रकाशकों द्वारा भी पुस्तकें अधिक संख्या में प्रकाशित की जायेंगी।

4.पाठ्यक्रमों में नवीन लेखिकाओं की रचनाओं को स्थान - हिन्दी भाषा एवं साहित्य के पाठ्यक्रम का पुनःनिर्धारण किया जाना चाहिये। इस पाठ्क्रम में नवीन लेखकों का भी समावेश किया जाना चाहिए।

5.निबंध साहित्य आधारित शोध कार्य को प्रोत्साहन - विभिन्न विश्वविद्यालयों में हो रहे शोधकार्यो में निबंध विधा से संबंधित शोध कार्यो को अगर प्रोत्साहन दिया जाएगा तो निश्चित रूप से इससे निबंध साहित्य पर सामग्री में वृद्धि होगी व व्यक्ति विशेष पर आधारित शोध के माध्यम से निबंध साहित्य की श्रीवृद्धि भी निश्चित रूप से होगी।

6.स्त्री विमर्श, वैचारिक समीक्षात्मक लेखन व निबंध के अन्तःसंबंधों की व्याख्या- स्त्री केन्द्रित लेखन पर हिन्दी में पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है लेकिन न जाने क्यों उसे 'स्त्री-विमर्श' नाम की एक पृथक श्रेणी में रखा जाता है। उसे अलग-अलग करना होगा। जाने क्यों उसे स्त्री-विमर्श नाम की एक पृथक श्रेणी में रखा जाता है। अतः उपर्युक्त तीनों को अलग-अलग करना।

साहित्य बुद्धि एवं हृदय की देन है जो अनुभूति के आधार पर प्रस्फुटित होकर अभिव्यक्ति की चेष्टा करता है। जब तक कि निर्मित एवं निर्माणरत साहित्यकार को अभिव्यक्ति का साधन नहीं मिलता वह छिपा पड़ा रहता है और प्रोत्साहन न पाकर स्वयमेव ही साहित्यिक परिदृश्य से अदृश्य हो जाता है। अतः इस दृष्टि से सभी को मिल-जुल कर प्रयास करने होगे। यदि समय रहते हुए इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो उनके योगदान से समूचा हिन्दी साहित्य निबंधकार, समीक्षक, पाठक अपरिचित रह जायेंगे।